अमानत को माले गनीमत की तरह न समझो

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

अमानत का मतलब और मफहूम बहुत आम है एक तो अमानत वो है जिसको हम लोग आम तौर पर अमानत समझते है के आपको किसी ने कोई चीझ रखने के वास्ते दी, उसी तरह से तिजारत के वास्ते किसी को रकम दी जाती है.

आम तौर पर आजकल ऐसा होता है के एक के पास पैसे है और दूसरे के पास पैसे नही है और वो कोई कारोबार करना चाहता है तो पैसे वाला केहता है है भाई मेरा पैसा लो और काम करो नफा मे हम दोनो बराबर के शरीक रहेन्गे कारोबार और तिजारत के तौर पर काम करो.

अब जो आदमी कारोबार कर रहा है उसके पास वो रकम अमानत के तौर पर हूवा करती है लेकिन फिर वो उसके अन्दर खियानत करता है नफा बहुत होता है लेकिन बतलाया नही जाता और उसको हज़म करने की तदबीरे की जाती है.

इसी तरह किसी के पास मस्जीद या मदरसा की रकमे रखी हुई है तो वो उसके पास सिर्फ हिफाज़त के लिये रखी गई है उसमे उसको खर्च करने का हक नही दिया गया उसके बावुजूद उसको माले गनीमत करार दे कर खर्च करने लगता है.

अमानत किया है?

अल्लाह की तरफ से अमानत के बारे मे जो ताकीद की गई है इस सिलसिले मे आयत पेश की है (सूरे निसा ५८) अल्लाह तुमको हुकम करते है के अमानते उनके हक्दार तक पोहचावो. इस आयत के शाने नुजूल के सिलसिले मे मुफस्सीरीन ने लिखा है के फतहे मक्का के मोके पर ये आयत नाजील हुई.

अमानत की वुसुआत

अरबी जुबान के ऍतेबार से अमानत का मफहूम सिर्फ इतना ही नही है बल्के अरबी जुबान मे अमानत एक वसी तरजुमे के लिये इस्तेमाल किया जाता है और उसमे ये भी आ जाता है वो मफहूम ये है के किसी काम को पूरा करने मे किसी पर ऍतेबार और भरोसा करना उसका नाम अमानत है.

अब भरोसा करने वाले ने जिस काम को पूरा करने मे और जिस ज़िम्मेदारी को पूरा करने मे जिस आदमी पर ऍतेमाद और भरोसा

किया है वो उसको पूरे तौर पर बजा लाता है तो यू कहा जायेगा के उसने अमानतदारी से काम लिया गोया एक अमानत उसके हवाले की और वो आदमी उसके ऍतेमाद पर पूरा उतरा और उसपर जो भरोसा किया गया था उसके मुताबिक उसको अन्जाम दिया उसमे ज़र्रा बराबर कमी और सुस्ती नही की तो कहा जायेगा उसने अमानत की अदायगी की.

और अगर उसने उस काम को पूरा करने मे सुस्ती की और उसपर पूरा न उतरा तो उसको खियानत से ताबीर किया जाता है जिसको हम अपनी जुबान मे विश्वास केहते है के अगर सामने वाला उसको पूरा न करे विश्वासघात करे उसको खियानत से ताबीर किया जाता है और किसी भी काम मे किसी के उपर विश्वास और ऍतेमाद करना उसको अमानत केहते है अरबी जुबान मे अमानत का यही मफहूम है.

दीन पूरा ही अमानत है

इस अमानत से मुराद पूरा दीन है, अल्लाह ने ये दीन इन्सानो के लिये नाजील किया है जो पूरा अमानत है दीन का एक एक हुकम अमानत है उसकी बजावरी इन्सान को करनी चाहिये अगर इसको अदा कर रहा है तो गोया अमानत अदा कर रहा है और अगर अदा

नही कर रहा है तो गोया अमानत की अदायगी मे खियानत कर रहा है बल्के उल्माने लिखा है के इन्सान का पूरा जिसम अमानत है अल्लाह ने हमे ये ज़िन्दगी अता फरमायी हमारा वूजूद और शरीर के हर हर अंग जैसे कान, नाक, जुबान, हाथ, पाउ और आंख ये सब अमानत है.

मुलाजमत मे खियानत

ज़िन्दगी के दूसरे शौबे भी है जिनमे अमानत का इतलाक होता है, अगर कोई हम पर ऍतेमाद करे और हम उसके खिलाफ करे तो ये खियानत केहलायेगी मसलन आप किसी के यहा मुलाजिम और नौकर हो गये, अब दोनो के दरमियान जितने वकत का मुआहदा और एग्रीमेंट हूवा उतना वकत आपने अपने अवकात मेसे तेय कर लिया मसलन रोजाना सुब आठ बजे से लेकर शाम को छे बजे तक के दस घंटे और दरमीयान मे दो घंटे की छुट्टी है तो आठ घंटे आप ने मालिक और शेठ को बेच दिये.

अब शेठ ने आपको काम सोपा के तुम्हे फला काम करना है तो गोया इन आठ घंटो के अब आप मालिक नही है बल्के वो मालिक है जिसके यहा आप मुलाजमत कर रहे है उसका मुआवजा आप को मिलने वाला है अब ये आठ घंटे आप वही इस्तेमाल करेंगे जहा

वो मालिक आपको बतला रहा है.

अब अगर कुछ वकत ऐसा है के जिसमे आपका कोई दोस्त आ गया और आप उसके साथ बात कर रहे है या उसमे आप अखबार पढ रहे है या उसमे आप कही दूर दूसरी जगह चले गये तो ये आपने खियानत की इसलीये के ये आठ घंटे आपके नही थे, आप तो तनख्वाह के बदले मे ये आठ घंटे का वकत शेठ और मालिक को दे चूके हो अब उसने आपको जहा इस्तेमाल करने का पाबन्द किया है उसीमे इस्तेमाल करे अगर उसमे से एक मिनट भी आप ज़ाये करेंगे तो ये खियानत केहलायेगी.

जिसमे अमानत का ज़ज्बा नही उसमे इमान नही

रसूलुल्लाहﷺ का एक इरशाद मेने नकल किया था जिसमे अमानत का ज़ज्बा न हो उसमे इमान नही ये इमान निकला ही है अमानत से रसूलुल्लाहﷺ से पूछा गया के कयामत कब आयेगी? तो आपﷺ ने जवाब दिया के जब अमानते ज़ाये की जाने लगे तो कयामत का इन्तेज़ार करो.

अल्लाह खियानत से हमारी हिफाज़त फरमाये. और उससे पूरी उम्मत को बचने की तौफीक अता फरमाये. आमीन.